उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का आत्म–सम्मान

श्रीमती शिल्पा पॉल
सहायक प्राध्यापक
हवाबाग महाविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

प्रो.(डॉ.) ब्रजेश कुमार शर्मा
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
शिक्षा संकाय
रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय
रायसेन, भोपाल (म.प्र.)

प्रस्तुत शोधपत्र में उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का अध्ययन किया गया है। न्यार्दश के रूप में 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया जिसमें से 300 छात्र व 300 छात्राएँ थी। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छात्र व छात्राओं के मध्य लिंग भेद न होने के कारण उनके आत्म–सम्मान में सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तावना–

प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है। सबका अपना अलग–अलग व्यक्तित्व होता है। व्यक्तित्व में भिन्नता व्यक्ति के स्व या आत्म पर निर्भर करती है, यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति का वातावरण व मूल प्रवृत्तियाँ समान हो तो भी सबका अपना अलग–अलग व्यक्तित्व होगा।

'आत्म' स्वयं के व्यक्तित्व से संबंधित आंतरिक छवि है तथा आत्म–सम्मान स्वयं को समझना है, तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण विशेषता है। आत्म–सम्मान व्यक्ति का स्वयं के प्रति नजरिया होता है। आत्म–सम्मान स्वयं के प्रति अभिवृत्ति को बताता है कि व्यक्ति स्वयं की क्षमताओं और सीमाओं के प्रति क्या महसूस करता है। जब व्यक्ति में स्वस्थ्य व उच्च आत्म–सम्मान पाया जाता है, तो वह स्वयं के बारे में अच्छा महसूस करता है व सकारात्मक सोच रखता है परन्तु यदि व्यक्ति में निम्न आत्म–सम्मान पाया जाता है तो वह स्वयं को अधिक महत्व नहीं देता वह अपने विचार और मतों को खुल कर नहीं रख पाता वह उन्हे निरर्थक समझता है।

आत्म–सम्मान व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है। यह व्यक्ति के जीवन में चुनाव की क्षमता, उसकी उन्नति और उसकी असफलताओं को निर्धारित करता है। उच्च आत्म–सम्मान व्यक्ति में सकारात्मक भाव को बढ़ाने के साथ साथ उसे सकारात्मकता के साथ जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। जबकि निम्न आत्म–सम्मान व्यक्ति को संकोची व निराशावान बना सकता है। जिससे उसे जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

अक्पामा जी. एलिजाबेथ (2013), ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्म सम्मान में लिंग भेद का अध्ययन किया व निष्कर्ष स्वरूप पाया की छात्र व छात्राओं के आत्म–सम्मान में कोई सार्थक अंतर नहीं है। ऐसा ही परिणाम **डॉ. मित्रा साउली** (2019) ने लिंग भेद और आत्म सम्मान विषय पर कार्य करते हुए पाया। उनके परिणामानुसार भी छात्र व छात्राओं के आत्म सम्मान में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

चर – स्वतन्त्र चर विद्यार्थी (छात्र व छात्राएँ)

आश्रित चर – आत्म–सम्मान

शोधकार्य के उद्देश्य – उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का अध्ययन करना।

परिकल्पना –

1. शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपकरण – प्रस्तुत शोधपत्र में निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

आत्म–सम्मान प्रश्नावली – मीनाक्षी विसवाल

सारणी क्रमांक 01

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में अंतर के तुलनात्मक परिणाम

विद्यालय	समूह लिंग	N	M	S.D	d.f	C.R	0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	छात्र	150	64.09	22.13	298	0.38	1.98	सार्थक नहीं
	छात्राएँ	150	65.09	22.92				
अशासकीय विद्यालय	छात्र	150	69.70	23.53	298	1.33	1.98	सार्थक नहीं
	छात्राएँ	150	73.26	22.77				
शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय	छात्र	300	66.90	22.98	598	1.21	1.96	सार्थक नहीं
	छात्राएँ	300	69.18	23.17				

उपरोक्त सारणी में शासकीय, अशासकीय एवं शासकीय तथा अशासकीय विद्यालय के कुल विद्यार्थियों के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान सम्बन्धी परिणाम प्रदर्शित किये गये है।

इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में सार्थक अंतर नही है। क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 0.38 आया है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु सारणीमान 1.98 से कम है। अर्थात शासकीय विद्यालयों के उच्च माध्यमिक कक्षाओं के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में सार्थक लिंग भिन्नता नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक 01 अस्वीकृत नही होती है।

इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि अशासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्मान में सार्थक अंतर नही है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.33 आया है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु सारणीमान 1.98 से कम है। अर्थात अशासकीय विद्यालयों के उच्च माध्यमिक कक्षाओं के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में सार्थक अंतर नही है। अतः परिकल्पना क्रमांक 02 अस्वीकृत नही होती है।

इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि शासकीय व अशासकीय विद्यालय के कुल विद्यार्थियों के छात्र व छात्राओं के आत्म–सम्मान में सार्थक अंतर नही है। क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 1.21 आया है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु सारणीमान 1.96 से कम है। अर्थात शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के उच्च माध्यमिक कक्षाओं के कुल छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक 03 अस्वीकृत नही होती है।

निष्कर्ष –

1. शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। क्योंकि वर्तमान में शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं का परिवेश ज्यादातर समान होता है, उन्हे समान सुविधाएँ प्राप्त होती है व उनके जीवन की अधिकतर कठिनाइयाँ भी समान होती है अतः इतनी समानताओं के कारण उनके आत्म–सम्मान में भी अंतर नहीं पाया गया।
2. अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नही पाया गया। क्योंकि अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के अभिभावक उनकी पढ़ाई को लेकर सजग व सचेत होते है। वह लड़का व लड़की में भेद नहीं करते है। लड़कों के समान ही लड़कियों को भी सुविधाएँ प्राप्त होने के कारण छात्र व छात्राओं के आत्म–सम्मान में भी अंतर नही पाया गया।
3. शासकीय व अशासकीय विद्यालय के कुल विद्यार्थियों के छात्र व छात्राओं के आत्म–सम्मान में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। क्योंकि आज कल छात्र व छात्राओं को समान दृष्टि से देखा जाने लगा है। छात्र एवं छात्राओं में लिंग भेद न होने के कारण उनके किसी भी व्यक्तित्व गुण में कुंठा नही पायी जाती वह दोनों ही आत्म विश्वास से अपने अपने क्षेत्रों में आगे बढ़ते हुए सम्मानीय पदो को प्राप्त कर रहे है। जिसके कारण उनके आत्म–सम्मान में भी अंतर नही पाया गया।

अतः यह कहना गलत न होगा की लिंग भेद न होने के कारण ऐसे परिणामों का आना स्वभाविक है।

सन्दर्भ –

- कपिल, एच. के. (1968–89), अनसंधान विधियाँ, हर प्रसाद भार्गव, आगरा, पंचम संस्करण
- माथुर, एस.एस. (2001), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीनतम संस्करण।
- बागड़े, रेखा एवं अन्य (2011), ''किशोर व किशोरियों के मध्य आत्म–सम्मान का तुलनात्मक अध्ययन'' रिसर्च हन्ट एन. इन्टरनेशनल मल्टी डिसीप्लीनरी ई. जनरल, वाल्यूम VI, इशु दिसंबर
- Joshy, Shobhnax, Sorivas Rekha (2009) "self esteam and Acadimie Achievement of adolescents, Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, vol- 391, octokes pp. 33-39